हरद्वारी लाल गोयल राजकीय महाविद्यालय तावडू, नूहँ

नाम – दीपांशु

कक्षा – बी. ए. द्वितीय वर्ष

अनुक्रमाक – 2983110016

विषय – हिंदी दिवस आयोजित पर एक कविता।

Edit with WPS Office

कविता

हिंदी थी वह जो लोगो के हृदयों में उमंग भरा करती थी
हिंदी थी वह भाषा जो लोगो के दिल में बसा करती थी।
हिंदी को ना जाने क्या हुआ रहने लगी हैरान परेशान
पूछा तो कहती है अब कहा है मेरा पहले सा सम्मान।
मैं तो थी लोगो की भाषा, मैं तो थी क्रांति की परिभाषा
मैं थी विचार- संचार का साधन मैं थी लोगो की अभिलाषा
मुझको देख अपनी दूर्दशा आज होती है बड़ी निराशा ।
सुन यह दुर्दशा व्यथा हिंदी की हृदय में हुआ बड़ा अज्ञात
बात तो सच है वास्तव में हिंदी के साथ हुआ बड़ा पक्षपात।
हिंदी जो थी जन- जन की भाषा और क्रांति की परिभाषा
वह कहती है लोटा दो उसका सम्मान यही है उसकी अभिलाषा।
अपने देश में हिंदी दिवस को बस एक दिन ना मनाओ
मैं तो कहता हिंदी दिवस का यह त्यौहार तुम रोज मनाओ।
आओ मिलकर प्रण ले हमसब करेंगे हिंदी का सम्मान
पूरी करेंगे हिंदी की अभिलाषा देंगे उसे दिलो मे स्थान।

Edit with WPS Office

धन्यवाद

सभी अध्यापकों को हमारी तरफ से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

🙏🙏

Edit with WPS Office